रिकॉर्ड :– आने वाले कल की तुम तस्वीर हो..... ॐ पिताश्री 21/6/64

ओम् शांति। बाप कहे बच्चों प्रति। बाप भी निराकार, बच्चे भी निराकार ही है; परन्तु यह जो साकारी चोला लिया है, इनसे पार्ट बजाना है। ऐसे पार्ट बजाने वाले बच्चों से बाप कहे, अब देही–अभिमानी बनो, अपन को आत्मा निश्चय करो। ऐसे न कहो, अहम् आत्मा सो परमात्मा हम आत्मा। ऐसे कब मत कहना। यह तो तुम बाप को 84 के चक्कर में धकेल देते हो, अपन को बाप समझ अपन को ही 84 के चक्कर में धकेल देते हैं। यह कहने से तुम रसातल में चले गए हो, बेड़ा डूबना शुरू हुआ है; क्योंकि सन्यासियों द्वारा सुना है कि हम आत्मा सो परमात्मा हम आत्मा, इसने ही तुम्हारा बेड़ा गर्क किया है। अब तुमको श्रीमत मिलती है। बच्चे जानते हैं, दो मत गाई हुई है। एक तो है श्रीमत भगवत यानी भगवान की श्रीमत अर्थात् बेहद बाप की मत। इन्होंने कृष्ण का नाम डाल दिया है। वह तो राँग है। कृष्ण को बाप नहीं कह सकते। बाप होते हैं तीन। एक ऊँच ते ऊँच प०पि०प० आत्मा का बाप, दूसरा है प्रजापिता ब्रह्मा। उनको प०पि० नहीं कहेंगे, वह प्रजा का पिता हो गया। इनका नाम भी बाला है। कृष्ण को प्रजापिता नहीं कहा गया है और तीसरा है लौकिक बाप। बेहद का बाप कहते हैं– बच्चे, देही–अभिमानी भव। अब श्रीमत की तुमको डायरैक्शन मिलती (है)। दोनों की मत इकट्ठी चलती है। तुम महसूस करते हो कि यह महावाक्य शिवबाबा समझाए रहे हैं। कभी–2 ब्रह्मा का भी निकलता है। त्रिमूर्ति शिव के बदले भूल से त्रिमूर्ति ब्रह्मा कह दिया; परन्तु इनका अर्थ कुछ नहीं निकलता है। त्रिमूर्ति ब्रह्मा कहने से ब्रह्मा की मत गाई हुई है, शिव को उड़ाए दिया है। कहते हैं, ब्रह्मा उतरा... अब ब्रह्मा तो है सूक्ष्मवतन में। ज़रूर राय देने वहाँ से उतरते हैं। सूक्ष्मवतन से आए कर मत देवे, फिर चला जावे, यह भी तो नहीं हो सकता। अब तुमने यह समझा है। प्रजापिता ब्रह्मा, इनको व्यक्त ब्रह्मा कहा जाता है। तुम अभी व्यक्त ब्राह्मण हो, फिर अव्यक्त सम्पूर्ण ब्राह्मण बनते हो, फिर तुम सूक्ष्मवतनवासी बन जावेंगे। सम्पूर्ण ब्रह्मा, सम्पूर्ण सरस्वती पास सूक्ष्मवतन में वही रहते हैं। वह विष्णु तो है ही युगल– (दो) भुजा लक्ष्मी कीं, दो भुजा नारायण कीं। अभी यह मत तो नामी–ग्रामी है। भगवानुवाच्य, ब्रह्मा तो देवता हो गया; परन्तु मत देते हैं प्रजापिता ब्रह्मा। इन बातों को अच्छी रीत समझना है। ब्रह्मा को मत देने वाला शिव है, जिसका नाम रखा है– त्रिमूर्ति ब्रह्मा। वास्तव में त्रिमूर्ति में ब्रह्मा बड़ा नहीं कहलाया जाता; क्योंकि ब्रह्मा तो है पतित। इनको ऊँच नहीं कहलाना चाहिए, ऊँच रखना चाहिए शंकर को; क्योंकि यहाँ ऊपर में रहते हैं। विष्णु के दो रूप ल०ना० फिर यहाँ आ जाते हैं। देव–देव–महादेव कहा जाता है न! तो महादेव हो गया शंकर। बच्चे तो समझते हैं, शिव है ऊँच ते ऊँच। बाप फिर सूक्ष्मवतन की रचना रचते हैं। मूल बात है श्रीमत पर चलना। ब्रह्मा भी श्रीमत पर चल इतना नामी बना है। मुरब्बी एक ही ब्रह्मा बच्चा है। शिवबाबा भी एक, ब्रह्मा भी एक ही है। प्रजापिता ब्रह्मा कहा जाता है न। प्रजापिता विष्णु व प्रजापिता शंकर को नहीं कहेंगे। अब तुम प्रजापिता ब्रह्मा के सामने बैठे हो। बाप कहते हैं, गृहस्थ व्यवहार में रहते, अपन को आत्मा निश्चय करो, निरंतर मुझे याद करने का पुरुषार्थ करो। फिर है त्याग की बात। ज्ञान–भक्ति–वैराग कहते हैं न! वैराग से त्याग होता है। सन्यासी पहले वैराग दिलाते हैं। यह कागविष्टा समान सुख है, स्त्री नर्क का द्वार है, नर्क में गोता खाना पड़ता है; इसलिए हम घर–बार छोड़ते हैं। सभी मनुष्य विकार में जाते हैं, इसलिए सारी दुनिया को नर्क कहा जाता है। सब नर्क के द्वार हैं। मैजॉरिटी कहेंगे, सब विषय सागर में गोते खाते हैं। तुम खुद कहते हो कि भारत सतयुग में स्वर्ग था, नर्क न था। अब नर्क में रहने वाले कहते हैं– हम स्वर्गवासी थे। यह सब संगम पर ही तुम जान सकते हो। वहाँ यह पता नहीं होगा कि हम नर्कवासी थे। अभी तुम बच्चों की बुद्धि में है, स्वर्ग में देवी–देवता

ही रहते हैं। प्राचीन भारत में प्युरिटी, पीस, प्रॉस्पेरिटी थी। नर्कवासी मनुष्य स्वर्ग स्थापन करने वाले शिवबाबा की महिमा गाते हैं– आप सुख के सागर, शांति के सागर हो। उस बाप से ही सेकेण्ड में जीवनमुक्ति का वर्सा मिलता है। यह भी समझाया है, तुम शिवबाबा की गोद लेते हो। यह है विचित्र की गोद। बाबा घड़ी–2 कहते हैं, किसके साथ चल रहे हो? शिवबाबा साथ। वर्सा मिलना ही उनसे है। बुद्धि में शिवबाबा ही याद आता है। उनसे स्वर्ग के अथाह सुख मिलेंगे। तुम कहेंगे, हम शिवबाबा के साथ चल रहे हैं। कोई नया मनुष्य ... कहेगा, शिव तो निराकार है, यह ब्रह्मा है, तुम शिवबाबा के साथ फिर कैसे चल रहे हो? विचित्र है न! तुम बच्चे जानते हो, हम शिवबाबा के सन्मुख बैठे हैं। शिवबाबा का कोई आकार–साकार है नहीं। वह निराकार इनके ही शरीर में आते हैं। यहाँ इनमें आकर बतलाते हैं– यह अपने जन्मों को नहीं जानते हैं। तुम बच्चे भी नहीं जानते थे। अभी तुम जानते हो, बरोबर हमने 84 जन्म पूरे किए। 84 जन्म ही गाए हुए हैं। जब पहले–2 सतयुग में ल०ना० थे तो ज़रूर यह ही 84 का चक्कर लगाते होंगे। और धर्म वाले तो बाद में आते हैं, वह इतने जन्म नहीं लेते। पहले आत्मा सतोप्रधान होती है, फिर पिछाड़ी में तमोप्रधान बनती है। तो यह है श्रीमत भगवान की। ब्रह्मा को भी वह मत देते हैं; परन्तु मुरब्बी बच्चा होने कारण अच्छी रीत धारणा कर समझाते हैं। कब वह भी आकर समझाते हैं। कहते हैं– बच्चे, देही–अभिमानी भव। शिवबाबा कहते हैं। ब्रह्मा भी कहते हैं कि पिताश्री कहते हैं, देही–अभिमानी भव। मैं भी देही–अभिमानी बनता हूँ, बाप को याद करता हूँ। अभी तुम प्रैक्टिकल में सन्मुख बैठे हो। वह है विचित्र। तुम तो चित्र वाले हो। सबको कहते हो– हे भाई! हे आत्माएँ! बाप को याद करो। आत्माओं से बात करते हो। एक/दो को सावधान कर उन्नति को पाओ। ब्रह्मा के तन द्वारा बाप कहते हैं, मुझ बाप को याद करने से स्वर्ग का वर्सा मिलेगा। इन भूतों के वश न होना। पहला नम्बर है अशुद्ध अहंकार। बॉडी कॉन्सेसनेस छोड़ दो, सोल कॉन्सेस बनो। भाई–2 हो तो ज़रूर बाप भी होगा। ब्रदर्स–सिस्टर्स का बाप हो गया ब्रह्मा। ब्रदर्स–ब्रदर्स का वह बाप है। वह निराकार, यह साकार। हम सब असल हैं ही निराकारी, फिर पार्ट बजाने आते हैं। यह है श्री शिव भगवानुवाच्य, कृष्ण भगवान नहीं है। इनको ही प्रजापिता ब्रह्मा कहा जाता है। कृष्ण से ही जैसे कि ब्रह्मा ऊँच हो गया। इस समय ब्रह्मा कृष्ण से ऊपर है; क्योंकि कृष्ण की आत्मा, जो सतयुग में थी, वह इस समय 84 जन्म में बाप के आए बने हैं। तो कृष्ण की आत्मा से यह अच्छी हुई न; क्योंकि इस समय सेवा करते हैं। कृष्ण की आत्मा तो वहाँ सिर्फ प्रालब्ध भोगेगी। तो दोनों में कौन बड़ा ऊँच हुआ? 84 जन्मों में पहला नम्बर ऊँच या यह संगम वाला ऊँच? वास्तव में हीरे जैसा जन्म यह है; क्योंकि यहाँ तुमको प्राप्ति होती है। वहाँ ऐसे नहीं कहेंगे कि प्राप्ति होती है। इस समय ही तुमको सारी प्रोपर्टी मिलनी है। तुम बहुत ऊँच सेवाधारी हो। तुम भारत को स्वर्ग बनाए राज करते हो, पतित भारत को पावन बनाए फिर उसमें राज करने वाले हो। तुम भारत के लकी स्टार्स हो। भारत, जो कंगाल, महादुःखी है, उनको सिरताज, महानसुखी बनाना है। सन्यासी भी पवित्र है, तब तो सब जाकर माथा टेकते हैं न! यह सारी पवित्रता की बलिहारी है। इसलिए बाप कहते हैं– काम शत्रु, जिसने तुमको अपवित्र बनाया है, पहले तो इनको जीतो। मुझ सर्वशक्तिवान साथ जितना योग लगावेंगे उतना पवित्र होते जावेंगे। तुमने 63 जन्म विषय सागर में गोते खाए हैं। अभी यह तुम्हारा अन्तिम जन्म है। अजामिल जैसे पापी गाए हुए हैं। एक सूरदास का नाम लेते हैं। पहले तो वह अजामिल था, कोई वैश्या के पास गया..... बाद में उसने आँखें निकाल दीं। तो अजामिल हुआ न। भारत में नारी एक ही पति करती थी और पति भी एक स्त्री करते थे। अब तो कितनी स्त्रियाँ रखते हैं! सतयुग में है ही पतिव्रत पावन धर्म,

सदैव सुख ही सुख रहता है। यहाँ तो है ही पतित सन्यासी। सतोप्रधान थे तो बहुत तीखे थे, कहाँ भी जंगलों में उनको भोजन मिलता था। पवित्रता की ताकत थी। ऐसे नहीं कि प०पि०प० सर्वशक्तिवान की ताकत थी। तुमको उनकी ताकत मिलती है। माया का राज शुरू होता है द्वापर से। पाँच विकारों रूपी रावण का राज्य आधा कल्प चलता है। मनुष्य समझते नहीं, पतित–पावन कौन है। गंगा को ही पतित–पावनी समझ लिया है। परमात्मा को जानते ही नहीं। कह देते, परमात्मा और उनकी रचना बेअंत हैं और सतयुग की आयु लाखों वर्ष है। अगर ऐसा होता तो देवता धर्म वालों की संख्या जास्ती होनी चाहिए। अभी तो क्रिश्चियन लोग, जो बाद में आए हैं, उन्हों की संख्या जास्ती हो गई है। यह बाप बैठ समझाते हैं। बुद्धि के लिए बाप भोजन देते हैं। तुम्हारी बुद्धि अभी कितना काम करती है। सन्यासियों की बुद्धि काम नहीं करती। रचता और रचना के आदि–मध्य–अंत को जानने का ताला बंद है। उनका है हद का सन्यास, हठयोग का। तुम्हारा है बेहद का राजयोग का। तुम राजाओं का राजा, स्वर्ग के मालिक बनते हो। इस समय जो पतित हैं वह थोड़े ही यह राज़ बतावेंगे। गीता सुनाते हैं। 18 अध्याय का कितना लम्बा अर्थ बैठ निकालते! कितनी गीताएँ बनाई हैं! सबकी अपनी–2 मत। गीता को समझा नहीं सकते। कृष्ण भगवान ही नहीं तो गीता को फिर समझे कैसे? बेसमझ के बनाए हुए शास्त्र, बेसमझ मनुष्य सुनते रहते हैं। कुछ भी समझते नहीं। अभी तुम जानते हो, वह सब हैं ही भक्तिमार्ग के। पाँच भूतों ने अजामिल जैसे पापी बना दिया है। नम्बरवार तो होते ही हैं, एक जैसे तो होते नहीं। समझा जाता है, बहुत अजामिल जैसे पापी हैं। शास्त्रों में लिखा है, द्रौपदी को पाँच पति थे। अब कहते हैं, शास्त्र लिखने वाला व्यास भगवान था। व्यास भी भगवान, कृष्ण भी भगवान, फिर भगवान तो बहुत हो गए! गॉड इज़ वन कहा जाता है। व्यास ने लिखा है, द्रौपदी को पाँच पति थे। अभी कहाँ हैं 5 पति? पुरुषों को दूसरी स्त्री हो सकती है, हिन्दू नारी कभी नहीं दूसरा पति करती। करके लाचारी बहुत दुखी हो पड़ती है, पालने वाला कोई न रहता है तो शादी कर लेती है। सो भी 5 कैसे करेंगे, वह तो व्यभिचार हो गया। तो कितने कलंक लगाए है। बाप समझाते हैं, भगवान तो एक है। वह आकर राजयोग सिखलाते हैं। ल०ना० और उनकी डिनायस्टी तमोप्रधान से सतोप्रधान बन रही है। वर्ल्ड हिस्ट्री–जॉग्राफी फिर से रिपीट होनी है। पहले–2 तो निश्चय चाहिए– बाबा, बस, हम तो आपकी ही श्रीमत पर चलेंगे, और कोई की भी मत पर न चलेंगे। तुम हो तो मनुष्य; परन्तु चलते हो श्रीमत पर। बाबा, जो हुक्म, जो आपकी आज्ञा, जो कहेंगे सो हम करेंगे, और कोई की भी मत पर न चलेंगे। तुम बच्चों की तकदीर जग रही है। तुम विश्व का मालिक बनते हो। और सबकी तकदीर सोई हुई है, बहुत दुखी हैं। आदि सनातन भारत स्वर्ग था, अब नहीं है। तमोप्रधान, पतित बन गए हैं। पतित–पावन ब्रह्मा को नहीं कहा जाता, कृष्ण को नहीं कहा जाता। पतित आत्मा बनी है, उनको पावन करने वाला परमात्मा ही है। स्वर्ग में सबकी ज्योत जगी रहती है। दीपमाला कहते हैं न! अभी तो उझानी हुई माला है। बाप कहते हैं, यह मेरी आत्माओं की माला है न। वहाँ सब पवित्र रहते हैं। अभी सब तमोप्रधान हैं, उझानी हुई माला है, फिर मैं वहाँ की माला बनाता हूँ। फिर विष्णु की भी माला बनाता हूँ। शिवबाबा बनाते हैं ब्रह्मा द्वारा। यह भी समझाया है, ब्राह्मणों की माला नहीं बन सकती; क्योंकि कब आसमान पर चढ़े रहते, कब फिर नीचे गिर पड़ते, निश्चय बुद्धि से बदल संशय बुद्धि हो पड़ते हैं। आज पक्के ब्राह्मण हैं, औरों को भी आप समान बनाते हैं, कल शूद्र बन जाते हैं। शिवबाबा कहते हैं, इसलिए ब्राह्मणों की माला नहीं बनती है। तुम पुरुषार्थ करते हो रुद्रमाला बनने; इसलिए योग लगाना है। योग पूरा होगा तो घट खुल जावेगा, मुरली चलती रहेगी। बुद्धि रूपी बर्तन पवित्र होगा तो धारणा भी होगी। बाप को याद करने से ही तुम वर्सा लेते हो, तुम्हारी आँख वर्से में चली जाती है। लौकिक बाप के बच्चों की भी वर्से में

नज़र रहती है न। कोई–2 बच्चे कहते हैं, पता नहीं कब यह बुड्ढा मरेगा, जो हमको मिल्कियत मिलेगी। कोई तो फिर बाप को मार भी डालते हैं। कोई–2 बाप ऐसे मनहूस होते हैं जो बच्चों को देते ही नहीं। स्त्री को घर खर्च भी नहीं देते। बाप कहते हैं, मूल बात कि निश्चय बुद्धि बनो। तुमने विचित्र की गोद पकड़ी है। इस चित्र द्वारा अब कहते हैं, मुझे याद करो। तुम्हारी जिन्न जैसी बुद्धि होनी चाहिए। शिवबाबा परमधाम में रहते हैं, अभी शिवबाबा मधुबन में मुरली बजाता होगा। घड़ी–2 शिवबाबा को याद करना पड़े। अभी तुम यहाँ बैठे हो। वही कहते हैं, मामेकम् याद करो तो तुम मेरी माला बन जावेंगे। यह है रुद्र ज्ञान यज्ञ। इसमें ब्राह्मण भी ज़रूर चाहिए। शास्त्रों में कोई यह लिखा हुआ न है कि जगदम्बा ब्राह्मणी थी, इनके बच्चे भी ब्राह्मण थे। गीता तो है ही झूठी। बाप के सिवाय कोई समझा न सके। बाप ही समझाते हैं; परन्तु माया भी बड़ी तीखी है, निश्चय होते–2 फिर माया झट संशय में लाए देती, फिर श्रीमत लेने लिए बुद्धि चलती नहीं, फिर पद भ्रष्ट बन पड़ते। चढ़े तो चाखे वैकुण्ठ का मालिक बने, गिरे तो चकनाचूर– प्रजा में भी कम पद। जो आश्चर्यवत् सुनन्ति, कथन्ति, भागन्ति हो जाते हैं, समझो यह कोई बहुत अजामिल था। बाबा ने इतना समझाया, मेहनत की, फिर भी मर पड़ा। माया ने थप्पड़ लगाय मुँह फेर दिया। आज हमारे पास बैठे हैं। रात को माया ने ऐसा थप्पड़ मारा जो कल चला गया। कोई कारण नहीं, पता नहीं क्या हुआ। ज़रूर योग ठीक न होगा। कोई विघ्न किया होगा जो गिर पड़ा। इंद्रसभा में कोई से आँख ल(गाए) गंदा बन आया, लायक न था, शिवबाबा को पता पड़ा यह गंदा है तो झट माया ने थप्पड़ मार दिया और चला गया। ऐसे बहुत होते रहते हैं रोज़ गंदे, फिर आकर सभा में बैठते हैं। इंद्रप्रस्थ की एक कहानी भी है– अंदर छिपकर आए बैठते थे, फिर बाहर जाए कोई को सुनाते थे तो उनके घट घुट जाते थे। वृंदावन में सुनाते हैं, अंदर डांस होती थी। अब तो डांस है वह ज्ञान का। बाहर जाए उल्टा बोलते हैं तो घट घुट जाते हैं। बाप बैठ समझाते हैं, अब जज करो, मैं राइट बताता हूँ न! सन्यासी लोग क्या करते हैं, कितने घमंडी हैं, गंगा के किनारे पर जाए बैठते, शिवोहम् कह अपनी पूजा कराते हैं। इस (दादा) ने खुद भी फूल चढ़ाए हैं। पुजारी बना न! अब बाप कहते हैं, जो अपन को पुजवाते हैं वह हैं हिरण्यकश्यप; इसलिए इन शिवोहम् आदि कहने वालों को छोड़ो। एक सद्गुरु तारे, बाकी सब हैं डुबोने वाले, पाप करते रहते हैं। गुरु को फॉलो करते नहीं और कहलाते हैं हम फॉलोअर्स हैं– यह तो गपोड़ा हो गया। मैं तो सद्गुरु हूँ। यहाँ करप्शन, एडल्ट्रेशन की कोई बात ही नहीं। शास्त्रों में एडल्ट्रेशन कर दी है। कृष्ण का नाम डालकर बहुत करप्टिव बन पड़े हैं। आजकल तो बहुत गंदे, विकारी भी बन पड़े हैं। कितने नाम रखवाते हैं! मद्रास की तरफ नाम रखाते हैं– भक्तवत्सलम्। तो बाप अंधियारे से निकाल रोशनी बैठ देते हैं। तुम अभी रोशनी में हो। इस समय के मनुष्य तो जनावर से भी बदतर है, एक/दो को गालियाँ देते रहते– ओह! यू डेविल! ऐ कुत्ते का बच्चा! गधे का बच्चा! एक दिन जज ने अपने बच्चे को कह दिया– ऐ गधे का बच्चा। बोला– साहब, हम गधा तो तुम भी गधा। जज उनको कुछ कह न सका; क्योंकि लॉ मुजीब उसने रिपीट किया। तो बाप कहते हैं, यह है दुःखधाम। नर्क है न! परन्तु कोई को कहो, तुम पतित हो तो बिगड़ पड़ेंगे। अरे, तुम गाते हो– पतित–पावन सीता–राम तो तुम पतित हो न! गांधी को भी कह सकते, तुम पतित हो तब तो पावन बनाने वाले को याद करते, फिर आपको महात्मा क्यों कहते हैं? कृष्ण को महात्मा कहते हैं। वह तो ठीक है; क्योंकि सतोप्रधान बच्चा है। इसलिए सब कृष्ण को प्यार करते हैं। बच्चा और महात्मा समान होता है। छोटे बच्चे में क्या विकार है! महात्माओं को तो फिर भी दुनिया का कुछ पता होगा। बच्चे को तो कुछ भी पता

नहीं। इसलिए बच्चे की महिमा है। तुम हो लकी ज्ञान सितारे। तुम्हारे पर बहुत रिस्पॉसिबुलिटी है। बाबा कहते हैं– खबरदार रहना! विकार में न जाना। तुम्हारा धंधा है पतित को पावन बनाने का। कोई को भी दुख मत दो। सदा सुखी बनना है। बाप बच्चे–2 कह समझाते हैं। फिर भी बुजुर्ग है न! इनकी आत्मा को भी बच्चा कहेंगे। यह आत्मा भी उनको बाप कहती है। कदम–2 पर श्रीमत पर चलना है। सेन्टर्स सब शिवबाबा के हैं, किसी मनुष्य के नहीं। शिवबाबा इन द्वारा स्थापना कर रहे हैं। यज्ञ रचना शिवबाबा का ही काम है। शिवबाबा की मत से सेन्टर्स खोलना है। उनकी मत पर चलना है। अगर श्रीमत पर न चले तो भस्मासुर हो जावें। उनकी मत छोड़ी गोया अपने ऊपर हाथ फेर अपन को भस्म कर लेते हैं। तुम हो ईश्वर के बच्चे तो मास्टर ईश्वर हो गए। जैसे बाप वहाँ रहते हैं वैसे बच्चे भी वहाँ रहते हैं। ईश्वर की औलाद ही फिर देवता बनती है, फिर वहाँ दैवी औलाद कहलावेंगे। इस समय तुम ईश्वरीय औलाद हो; क्योंकि ईश्वर की मत पर चलते हो। बाबा! जो आपकी आज्ञा, बाबा! आप जो कहो वह ठीक है। तो फिर रिस्पॉसिबुलिटी बाबा के ऊपर हो जावेगी। वह कुछ उल्टा कहेंगे तो भी सुल्टा हो जावेगा। अभी विनाश होता है सुल्टी बातें। मनुष्य कहेंगे– तुम तो मुख से उल्टा बोलते हो। बोलो– नहीं, यह विनाश तो बहुत कल्याणकारी है। इनसे ही मुक्ति–जीवनमुक्ति के गेट्स खुलते हैं। अपन जानते हैं, हम जीवनमुक्ति के गेट में जावेंगे, बाकी सब मुक्ति के गेट में जावेंगे। भगवान ही मुक्ति–जीवनमुक्ति के गेट खोलते हैं। बाप ने ही खोले थे, जबकि संगमयुग था। इतने सब बच्चे हैं। सब कहेंगे, हम जाते हैं गॉड फादरली कॉलेज में पढ़ने। इसमें अंधश्रद्धा की तो कोई बात नहीं। कॉलेज में अंधश्रद्धा नहीं होती है। हम गॉड फादरली कॉलेज में राजयोग सीखने जाते हैं। कदम–2 पर शिवबाबा को याद करते रहो। बाबा की याद में बहुत बल है। सारी सृष्टि को योगबल से पावन बनाते हो। तुम जिन्न हो। बुद्धि ऊपर लटकी रहे– बाबा परमधाम निवासी आज मधुबन में मुरली चलाते होंगे, कल बॉम्बे चलावेंगे। शिवबाबा के लिए कहेंगे, अभी मात–पिता पास सन्मुख बैठे हैं। मम्मा के लिए तो ऐसे नहीं समझेंगे, हम शिवबाबा के सन्मुख बैठे हैं। यहाँ बाबा के तन में आते हैं। हमने हाथ दिया है शिवबाबा को। घड़ी–2 शिवबाबा याद रहे तो बेड़ा पार हो सकता है। याद से सुल्टा, न याद से उल्टा होता रहेगा। मेहनत है विचित्र को विचित्र बन याद करना है। तुम शिवबालक पर बलि चढ़ते हो, वर्सा देते हो। बालक को इसके एबज में बाबा 21 जन्म वर्सा देते हैं। पहले तुमको वारी जाना है। पहले बालक को मालिक बनना पड़े, फिर बाप विश्व का मालिक बनावे। मीठे–2, आज्ञाकारी, लाडले, सिकीलधे, स्वदर्शनचक्रधारी बच्चों प्रति मात–पिता का, बापदादा का यादप्यार, गुडमॉर्निंग।